डॉ.या.वे.रेड्डी, गवर्नर द्वारा स्वागत भाषण*

माननीय प्रधान मंत्री जी, विशिष्ट अतिथिगण और मित्रो !

रिज़र्व बैंक के सेवा निवृत्त और कार्यरत कर्मचारियों की ओर से, बैंक के केंद्रीय बोर्ड की ओर से और अपनी ओर से अपने अतिविशिष्ट प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी, महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री एस.एम.कृष्णा जी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देशमुख जी, केंद्रीय वित्त मंत्री श्री चिदंबरम जी और अन्य विशिष्ट अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए मैं बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। बैंक को, राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम के नवम्बर 2004 में बैंक के मौद्रिक संग्रहालय के उद्घाटन पर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आज अभूतपूर्व घटना यह हुई है कि देश के प्रधान मंत्री रिज़र्व बैंक में पधारे हैं और श्रीमान् जी ! हम आपके इस अनुग्रह के लिए आपके आभारी हैं । सत्तर साल पहले स्थापित रिजर्व बैंक अपनी उपलब्धियों के लिए गर्व महसूस कर सकता है। उसका प्रमाण इतिहास के खंडों का विमोचन है।

इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि रिजर्व बैंक उत्कृष्टतम और वैश्विक स्तर का सर्वोत्तम मानक बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रगत वित्तीय अध्ययन केंद्र का उद्घाटन हमारी इस प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह 1955 में शुरू किए गए बैंकर प्रशिक्षण महाविद्यालय के सुनियोजित विकास को भी स्पष्ट करता है जिसने समग्र रूप से वित्तीय क्षेत्र की दक्षता और स्थायित्व को बढ़ाने में अपना योगदान दिया है। प्रगत अध्ययन प्रक्रिया को संस्था का स्वरूप देने के विचार को इंदिरा गांधी विकास और अनुसंधान संस्थान की स्थापना के लिए की गई शुरूआत से प्रेरणा मिली।

श्रीमान् जी ! रिज़र्व बैंक अपनी व्यावसायिक कुशलता के लिए गौरवान्वित है और उसका कुछ प्रमाण हमारे प्रकाशनों में मिलता है। उनमें से एक अद्यतन प्रकाशन है ''मुद्रा और वित्त रिपोर्ट''। इस रिपोर्ट में बैंक के विकास की झलक है । विशेष रूप से यह प्रदर्शित होता है कि किस तरह हमने देश में एक विश्वसनीय और आदर प्राप्त लोक संस्था के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखा और उसे बढ़ाया है। यह बहुत ही उपयुक्त सुअवसर है कि देश के माननीय वित्त मंत्री श्री चिदंबरम जी, जिन्होंने 10 साल पहले वित्त मंत्री के रूप में अपनी भूमिका निभाई थी, और आज भी बैंक के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं, इसका विमोचन कर रहे हैं।

महाराष्ट्र सरकार हमें अपने कार्य निर्वाह में सभी तरह का मूल्यवान समर्थन देने में बहुत उदार रही है। इसलिए हम उसके आभारी हैं । मुझे विश्वास है कि हम विविध क्षमताओं जैसे, इसके बैंकर, इसके ऋण प्रबंधक आदि के रूप में राज्य की संतोषजनक ढंग से सेवा कर रहे हैं। हम अपने महाराष्ट्र राज्य के गवर्नर और मुख्यमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं।

अंत में, मैं यहां एकत्र हुए सभी विशिष्ट अतिथियों का हार्दिक स्वागत करता हूं जिन्होंने हमारे आमंत्रण को स्वीकार किया।

अब मैं माननीय वित्त मंत्री से अनुरोध करता हूं कि वे मुद्रा और वित्त रिपोर्ट के अद्यतन प्रकाशन का विमोचन करें।

भारतीय रिज़र्व बैंक के इतिहास का पहला खंड प्रमुख रूप से श्री एस.एल.एन.सिम्हा, भारतीय रिज़र्व बैंक के वरिष्ठ अर्थशास्त्री का कार्य है जिसे दुबारा मुद्रित किया गया है। इसका दूसरा खंड डॉ. श्री रंगराजन की अध्यक्षता में गठित समिति के समग्र मार्गदर्शन में डॉ. बालचंद्रन द्वारा लिखा गया है। इसका तीसरा खंड जो अब पूरा हुआ है, स्वर्गीय डॉ. अंबीराजन, सुश्री चांडी बाटलीवाला, डॉ.ए.वासुदेवन और श्री टी.सी.ए. श्रीनिवास राघवन द्वारा डॉ. श्री रंगराजन और डॉ. विमल जालान, गवर्नरों की अध्यक्षता में गठित समिति के समग्र मार्गदर्शन में लिखा गया है।

अब, मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करता हूँ कि वे इतिहास के इस खंड का विमोचन करें।

मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करता हूँ कि वे प्रगत वित्तीय अध्ययन केंद्र का उद्घाटन करें।

मेरा अनुरोध है कि मानननीय प्रधान मंत्री जी इन विद्वतजन को संबोधित करें।

* भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई में 18 मार्च 2006 को भारतीय रिज़र्व बैंक के इतिहास के तीसरे खंड के विमोचन के अवसर पर दिया गया भाषण।